अमर उजाला

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

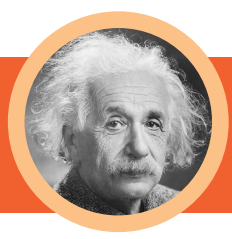

जो छोटे मामलों में सच के प्रति लापरवाह है, उस पर महत्वपूर्ण मामलों में भी भरोसा नहीं किया जा सकता है। -अलबर्ट आईंस्टीन

युवा पर्यावरण कार्यकर्ता दिशा रवि की गिरफ्तारी के बाद दिल्ली पुलिस ने किसान आंदोलन के समर्थन में तैयार किए गए विवादास्पद टूलकिट से जुड़े जो दावे किए हैं, वह गहरी साजिश की ओर इशारा करते हैं। ऐसे में जरूरी है कि इस मामले को जल्द से जल्द निर्णायक परिणति तक पहुंचाया जाए।

आंदोलन और देश की गरिमा

दिल्ली की सीमाओं पर चल रहे किसान आंदोलन से जुड़े प्रदर्शनों को लेकर बनाए गए विवादास्पद 'टूलकिट' के मामले में बंगलूरू की युवा पर्यावरण कार्यकर्ता दिशा रवि की देशद्रोह और साजिश के आरोप में गिरफ्तारी परेशान करने वाली है, मगर उससे भी कहीं अधिक विचलित कर देने वाले दावे दिल्ली पुलिस के हैं, जिसके मुताबिक इस साजिश के तार खालिस्तानी अलगाववादियों से जुड़ते हैं। किसान संगठनों द्वारा सरकार को दिए गए आश्वासन के बावजूद 26 जनवरी को जो कुछ घटा, वह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण था और इससे हमारे गणतंत्र को ऐतिहासिक रूप से धक्का पहुंचा था। ऐसी घटना को कुछ लोग साजिश कर अंजाम तक पहुंचाते हैं, तो यह वाकई बहुत चिंता की बात है। सोशल मीडिया के दौर में आंदोलनों में टूलकिट का इस्तेमाल नया नहीं है; जैसा कि 2011 के 'ऑक्यूपाई वॉल स्ट्रीट' के समय देखा गया था या हांगकांग में चीनी दमन के विरुद्ध चलने वाले आंदोलनों में देखा जा सकता है। मगर यह महज संयोग नहीं हो सकता कि स्वीडन की युवा पर्यावरण कार्यकर्ता ग्रेटा थनबर्ग ने तीन फरवरी को किसान आंदोलन के समर्थन में ट्वीट करते हुए जो टूलकिट जारी किया था, उसके ब्योरे 26 जनवरी को हुए प्रदर्शन से मिलते-जुलते हैं। यही नहीं, इसमें देश और विदेश में प्रदर्शनों को लेकर दिशा-निर्देश भी दिए गए थे। दिल्ली पुलिस ने मुंबई की वकील निकिता जैकब, उनके साथी शांतनु और दिशा रवि को इस विवादास्पद टूलकिट के लिए न केवल जिम्मेदार बताया है, बल्कि उसने यह भी दावा किया है कि निकिता और शांतनु ने 11 जनवरी को जूम पर हुई एक मीटिंग में भी हिस्सा लिया था, जिसमें खालिस्तान समर्थक अलगवावादी गुट पोएटिक जस्टिस फाउंडेशन (पीजेएफ) के प्रतिनिधि भी शामिल थे। दरअसल इन लोगों की संदिग्ध भूमिका को लेकर शक इसलिए भी होता है, क्योंकि दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने मुंबई में 11 फरवरी को निकिता से पूछताछ की थी, मगर

अगले दिन वह अंडरग्राउंड हो गई, जिसके कारण कोर्ट को उसके खिलाफ गैरजमानती वारंट जारी करना पड़ा। कहने की जरूरत नहीं कि भारतीय राष्ट्र के विरुद्ध किसी भी तरह की साजिश स्वीकार्य नहीं है। अब जरूरी है कि पुलिस सारे सबूतों और तथ्यों के साथ इस मामले को उसकी तार्किक परिणति तक पहुंचाए और तब तक सारे पक्षों को धैर्य से प्रतीक्षा करनी चाहिए।

टीके के प्रति भरोसा

चूंकि कोविड-19 के खिलाफ हम एक महत्वपूर्ण बिंदु पर पहुंचे हैं तथा अग्रिम पंक्ति के लोगों को कोविड-19 के टीके लग रहे हैं, ऐसे में, वैक्सीन के प्रति सार्वजनिक भरोसे को पारदर्शिता और सार्वजनिक स्वास्थ्य संचार द्वारा जीता जा सकता है।

राम्या पिनामनेनी

श्रावंती एम शेषशायी

विगत 16 जनवरी को भारत ने कोविड-19 के खिलाफ लगभग 30 करोड़ अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्ताओं के टीकाकरण का लक्ष्य रखकर दुनिया का सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान शुरू किया था। यह अभियान देश में तैयार कोवाक्सिन और कोविशील्ड टीकों के जरिये चलाया गया और जिसे महामारी द्वारा ग्यारह महीनों की घेराबंदी के संभावित अंत की शुरुआत बताया जा रहा है। पिछले एक साल में महामारी ने मौजूदा सार्वजनिक स्वास्थ्य नीति और वैश्विक व राष्ट्रीय स्तर पर तैयारियों के लिए चुनौती पेश की है। भारत जैसे निम्न से मध्य आय वाले देशों ने यह मानते हुए, कि उनके स्वास्थ्य तंत्र पर बढ़ता दबाव सहने की क्षमता कम है, कोविड-19 के खिलाफ व्यापक निगरानी तथा जोखिम से निपटने के लिए लोगों को जागरूक करने का अभियान शुरू करने पर ध्यान केंद्रित किया।

इस तरह की रणनीतियां न तो सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए नई हैं और न ही भारत के लिए। दशकों से क्षेत्रीय महामारियों से निपटने के प्रशिक्षण के साथ देश के सार्वजनिक स्वास्थ्य योजना में व्यापक सामाजिक और व्यवहार परिवर्तन के उद्देश्य से संचार रणनीतियों का उपयोग शामिल है। उदाहरण के लिए, 2018 के पोषण अभियान का मुख्य घटक जनांदोलन है। अब कोविड-19 संचार में इसे लागू किया जा रहा है। इसमें मौजूदा प्लेटफार्मों के माध्यम से संदेशों का सामुदायिक प्रसार और सभी हितधारकों को एकजुट करने वाले एकीकृत विविध मीडिया आख्यान शामिल हैं। गौरतलब है कि 20 लाख से अधिक मान्यता प्राप्त आशा और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं ने, जो पहले से ही ग्रामीण प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं के बुनियादी ढांचे में शामिल हैं, कोविड -19 पर लोगों को शिक्षित करने के लिए मातृ और बाल स्वास्थ्य में अपनी भूमिकाओं का विस्तार किया।

विगत अप्रैल में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने अंतर-मंत्रालयी

सहयोग और राष्ट्रीय व राज्य-स्तरीय प्रतिक्रियाओं के तालमेल के साथ महामारी की भीषण चुनौती से निपटने को एक नियंत्रण योजना जारी की। विगत मार्च-अप्रैल में दूरदर्शन पर हिंदी और अंग्रेजी में कुल 36 वीडियो प्रसारित किए गए, जबकि महामारी के व्यापक रूप लेने के बरक्स अधिकाधिक क्षेत्रीय सामग्री विकसित और प्रचारित करना जारी रहा।

कोविड-19 वैक्सीन के प्रति लोगों में भरोसा जगाने के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य विभाग, स्वास्थ्य पत्रकारों, वैज्ञानिक विशेषज्ञों और दवा उद्योग के दिग्गजों ने संभावित वैक्सीनों के विवरण पेश किए तथा टीके के प्रकार, उनके तंत्र, नैदानिक परीक्षण, सुरक्षा के सभी महत्वपूर्ण पैमाने और प्रभावशीलता से जुड़ी जानकारियां प्रदान कीं। राष्ट्रीय कोविड-19 वैक्सीन संचार रणनीति ने नए टीकों पर पारदर्शी रूप से सूचना प्रसारित करने के लिए वैक्सीन के प्रति संकोच को खत्म किया, उसके प्रति भरोसा जगाया और टीकाकरण अभियान के बारे में लोगों को सूचित किया। पहले से जुड़े हितधारकों ने अब समुदाय को प्रभावित करने वाले लोगों और नेताओं के साथ भागीदारी करने पर ध्यान केंद्रित किया, जिससे कि टीके के बारे में सटीक जानकारी प्रसारित करने, टीके के लाभ पर साक्ष्य आधारित सोशल एवं पारंपरिक मीडिया सामग्री तैयार करने, गलत सूचनाओं पर काबू पाने के लिए डिजिटल मीडिया की निगरानी करने तथा लोगों का भरोसा जीतने के लिए वैक्सीन-प्रतिरोधी समूहों की पहचान कर उनके साथ काम किया जा सके।

सामूहिक टीकाकरण अभियानों के भारत के अनुभव को इसके सफल कार्यान्वयन द्वारा चिह्नित किया गया है, जो टीका के प्रति भरोसा जगाने के लिए बड़े पैमाने पर संचार और सामाजिक मीडिया रणनीतियों का उपयोग करता है। यह भरोसा नवंबर, 2020 के एक सर्वेक्षण में परिलक्षित हुआ, जिसमें 87 फीसदी भारतीयों ने उपलब्ध होने पर कोविड-19 का टीका लगवाने की इच्छा जताई। हालांकि हमें मुश्किल से जीते हुए इस भरोसे को बरकरार रखने के प्रति सावधान रहना चाहिए। तीन जनवरी, 2021 को एक अप्रत्याशित घटनाक्रम के तहत, जिसने वैक्सीन विशेषज्ञों और लोगों को हैरान कर दिया, भारत के सेंट्रल ड्रग्स स्टैंडर्ड कंट्रोल ऑर्गनाइजेशन (सीडीएससीओ) ने कोवाक्सिन को आपातकालीन परिस्थितियों में भारी सावधानी के साथ उपयोग की मंजूरी देने की घोषणा की, जिसका तब नैदानिक परीक्षण पूरा नहीं हुआ था। वैज्ञानिक समुदाय के अलावा विशेषज्ञों ने भी कोवाक्सिन के तीसरे चरण के नैदानिक परीक्षण के आंकड़े के अभाव पर संदेह और चिंताएं व्यक्त कीं, जो टीका की प्रभावकारिता का प्रदर्शन करते हैं। कोवाक्सिन को दी गई मंजूरी की भाषा भी भ्रामक थी, जिसमें उसे क्लिनिकल ट्रायल के तौर पर मंजूरी दी गई थी। इससे सार्वजनिक विमर्श में टीके के प्रति एक प्रकार का भ्रम पैदा हुआ। अतीत में भी भारत में टीके के प्रति अविश्वास एवं संकोच देखा गया है। हम कोविड-19 के खिलाफ अपने प्रयासों में एक महत्वपूर्ण बिंदु पर पहुंचे हैं, जिसमें टीके के प्रति सार्वजनिक भरोसा अब भी पारदर्शिता, अखंडता और सार्वजनिक स्वास्थ्य संचार द्वारा फिर से जीता जा सकता है।

चूंकि अग्रिम पंक्ति के और उच्च जोखिम वाले लोगों को सार्वजनिक निगरानी के तहत दुनिया भर में और भारत में टीके लगने लगे हैं, इसलिए सरकारों, विशेषज्ञों और मीडिया को वैज्ञानिक शब्दजाल के बजाय सबसे अधिक प्रासंगिक और आसानी से समझी जाने वाली भाषा को प्राथमिकता देनी चाहिए।

उन्हें उन तथ्यों के हर कदम, जिन्हें हम जानते हैं या नहीं जानते हैं और हर उदाहरण को दोहराना चाहिए कि कैसे कोई व्यक्ति या संस्थान अच्छी तरह से खुद की रक्षा कर सकता है। तथ्यों को जांचने की सेवाओं का उदय आशाजनक है। जैसा कि भारत बताता है कि कोविड-19 महामारी के अंत का समाधान क्या है, हमें टीके और कोविड-19 सावधानियों पर विवेकवान बने रहना चाहिए, और इस अंतिम चरण में पीछे की ओर कदम नहीं बढ़ाना चाहिए।

-राम्या पिनामनेनी हार्वर्ड टी.एच में रिसर्च फेलो व चिकित्सक हैं तथा श्रावंती एम शेषशायी मैनेहेल्थ में रिसर्च एनालिस्ट हैं। लेखिकाद्वय हार्वर्ड टी.एच से जन स्वास्थ्य में ग्रेजुएट हैं।

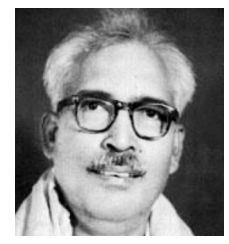

हजारी प्रसाद द्विवेदी
1907-1979

मुखड़ा क्या देखे दर्पण में

वसंत भागता-भागता चलता है। देश में नहीं, काल में। किसी का वसंत पंद्रह दिन का है, तो किसी का नौ महीने का। मौजी है अमरुद। बारह महीने इसका वसंत ही वसंत है।

वसंत आता नहीं ले आया जाता है

जिस स्थान पर बैठकर लिख रहा हूं, उसके आस-पास कुछ थोड़े-से पेड़ हैं। एक शिरीष हैं, जिस पर लंबी-लंबी सूखी छिमियां अभी लटकी हुई हैं। पत्ते कुछ झड़ गए हैं और कुछ झड़ने के रास्ते में हैं। जरा-सी हवा चली नहीं कि अस्थिमालिकावाले उन्मत्त कापालिक भैरव की भांति खड़खड़ाकर झूम उठते हैं। *'कुसुम जन्म ततो नव पल्लवाः'* का कहीं नाम-गंध भी नहीं है। एक नीम है। जवान है, मगर कुछ अत्यंत छोटी किसलयिकाओं के सिवा उमंग का कोई चिह्न उसमें भी नहीं है। फिर भी यह बुरा मालूम नहीं होता।

मसें भीगी हैं और आशा तो है ही। दो कांचनार वृक्ष इस हिंदी भवन में हैं। एक ठीक मेरे दरवाजे पर और दूसरा मेरे पड़ोसी के। भाग्य की विडंबना देखिए कि दोनों एक ही दिन के लगाए गए हैं। मेरा वाला ज्यादा स्वस्थ और सबल है। पड़ोसी वाला कमजोर, मरियल। परंतु इसमें फूल नहीं आए। और वह कम्बख्त कंधे पर से फूल पड़ा। मरियल-सा पेड़ है, पर क्या मजाल कि आप उसमें फूल के सिवा और कुछ देखें! पत्ते हैं नहीं और टहनियां फूलों से ढक गई हैं। मैं रोज देखता हूं कि हमारे वाले मियां कितने अग्रसर हुए? कल तीन फूल निकले थे। उसमें दो तो एक संथाल बालिका तोड़कर ले गई। एक रह गया। मुझे कांचनार फूल की ललाई बहुत भाती है। सबसे बड़ी बात यह है कि इन फूलों की पकौड़ियां भी बन सकती हैं। पर दुर्भाग्य देखिए कि इतना स्वस्थ पेड़ ऐसा सूना पड़ा हुआ है और वह कमजोर, दुबला लहक उठा! कमजोर में भावुकता ज्यादा होती होगी! पढ़ता-लिखता हूं। यही पेशा है। सो दुनिया के बारे में पोथियों के सहारे ही थोड़ा-बहुत जानता हूं। सारी दुनिया में हल्ला हो गया कि वसंत आ गया। पर इन कमबख्तों को खबर ही नहीं। कभी-कभी सोचता हूं कि इनके पास तक संदेश पहुंचाने का क्या कोई साधन नहीं हो सकता? महुआ बदनाम है कि उसे सबके बाद वसंत का अनुभव होता है; पर जामुन कौन अच्छा है! वह तो और भी बाद में फूलता है। और कालिदास का लाडला यह कर्णिकार? आप जेठ में मौज में आते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि वसंत भागता-भागता चलता है। देश में नहीं, काल में। किसी का वसंत पंद्रह दिन का है, तो किसी का नौ महीने का। मौजी है अमरूद। बारह महीने इसका वसंत ही वसंत है। हिंदी भवन के सामने गंधराज पुष्पों की पांत है। ये अजीब है, वर्षा में ये खिलते हैं, लेकिन ऋतु विशेष के उतने कायल नहीं हैं। पानी पड़ गया, तो आज भी फूल ले सकते हैं।

पलाश ऐसा फूला है कि ईर्ष्या होती है। मगर उसे किसने बताया कि वसंत आ गया है? मैं थोड़ा-थोड़ा समझता हूं। वसंत आता नहीं, ले आया जाता है। जो चाहे और जब चाहे, अपने पर ले आ सकता है।

कविओं की दुनिया में जिसकी कभी चर्चा नहीं हुई, ऐसी एक घास है—विष्णुकांता। हिंदी भवन के आंगन में बहुत है। कैसा मनोहर नाम है! फूल और भी मनोहर होते हैं। जरा-सा तो आकार होता है, पर बलिहारी है उस नील मेदुर रूप की। बादल की बात छोड़िए, जरा-सी पुरवैया बह गई, तो इसका उल्लास देखिए। बरसात के समय तो इतनी खिलती है कि मत पूछिए। मैं सोचता हूं कि इस नाचीज लता को संदेश कैसे पहुंचता है? थोड़ी दूर पर वह पलाश ऐसा फूला है कि ईर्ष्या होती है। मगर उसे किसने बताया कि वसंत आ गया है? मैं थोड़ा-थोड़ा समझता हूं। वसंत आता नहीं, ले आया जाता है। जो चाहे और जब चाहे, अपने पर ले आ सकता है। वह मरियल कांचनार ले आया है। अपने मोटेराम तैयार कर रहे हैं, और मैं? मुझे बुखार आ रहा है। यह भी नियति का मजाक ही है। सारी दुनिया में हल्ला हो गया कि वसंत आ रहा है, और मेरे पास आया बुखार। अपने कांचनार की ओर देखता हूं और सोचता हूं, मेरी वजह से तो यह नहीं रुका है?

जहान गीत सिंह

मंजिलें और भी हैं

ढोल बजाना मेरा शौक है, पर बाद में मुझे पता चला कि मेरा ढोल बजाना समाज की पारंपरिक सोच से अलग है। स्टेज पर ढोल बजाते हुए देखकर यदि कोई मुझसे प्रेरित होता है, तो यह मेरे लिए काफी है।

ढोल बजाना शौक नहीं बल्कि जुनून बन गया

मैं चंडीगढ़ की रहने वाली हूं। मेरा परिवार हमेशा से ही अपनी संस्कृति से जुड़ा हुआ था। एक बार स्कूल से लौटते समय मैंने रास्ते में कुछ लोगों को ढोल बजाते देखा, तो मुझे ढोल बजाना सीखने की इच्छा हुई। मैंने जब ढोल बजाना सीखने की बात अपने घर में बताई, तो सबको हैरानी हुई। क्योंकि सबने हमेशा पुरुषों को ही ढोल बजाते देखा है। पापा ने मेरे लिए उस्ताद ढूंढ़ना शुरू किया, पर लगभग सभी उस्तादों ने मुझे ढोल बजाना सिखाने से मना कर दिया। जब वे सुनते थे कि लड़की को ढोल बजाना सिखाना है, तो उनके चेहरे पर मेरे लिए एक हीन भावना आ जाती थी। मानो ये लोग मुझसे सवाल कर रहे हों कि एक लड़की ऐसा सोच भी कैसे सकती है। खैर, उस्ताद की तलाश जारी रही, और काफी कोशिशों के बाद सरदार करतार सिंह मुझे ढोल सिखाने के लिए तैयार हो गए। उस वक्त उस्ताद को लगा था कि जल्दी ही, मैं सीखने से मना कर दूंगी। बीतते वक्त के साथ उन्हें समझ में आया कि ढोल सीखना वास्तव में मेरा जुनून है। उसके बाद उस्ताद जी ने मुझे घर आकर सिखाना शुरू किया।

(विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित)

चुनौतियां भी आईं

उस उम्र में ढोल का वजन संभालना बड़ी चुनौती रहा। कई बार रियाज करते समय मेरे हाथों में छाले पड़ जाते थे, तो कई बार खून भी निकलने लगता था। पर मेरे दिमाग में बस एक ही धुन सवार थी कि बाकी ढोलियों की तरह घंटों तक मुझे ढोल बजाना है। कुछ वक्त सीखने के बाद मैंने अपनी पहली पब्लिक परफॉरमेंस चंडीगढ़ में दी।

प्रोत्साहन के साथ ताने भी

वहां पर जितने भी लोग थे, उनके लिए यह बहुत नया था। मेरी परफॉरमेंस के समय सब कुछ पल के लिए खामोश हो गए थे, क्योंकि उन्हें लगा था कि शायद मैं ऐसे ही ढोल लेकर स्टेज पर आई हूं और उसे किनारे रखकर नृत्य या कुछ और करूंगी। ढोल बजाने पर जहां मुझे दर्शकों से सराहना मिली, वहीं दोस्तों, रिश्तेदारों को पता चलते पर प्रोत्साहन के साथ-साथ ताने भी सुनने को मिले।

खुशी मिली

एक बार प्रस्तुति के बाद एक आंटी मेरे पास आईं और गले लगकर रोने लगीं। उन्होंने कहा कि उनकी बेटी बहुत अच्छा भांगड़ा करती थी, पर लोगों की बातों के चलते उसने छोड़ दिया। लेकिन मुझे ढोल बजाते देख उन्हें एहसास हुआ कि वह अपनी बेटी को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करेंगी। यह सुनकर मुझे बहुत अच्छा लगा। पिछले आठ-दस वर्षों में मैंने तीन-चार सौ समारोह में अपनी प्रस्तुति दी है।

आंकड़े

केंद्र संरक्षित स्मारक और स्थल

देश भर में मौजूद प्रमुख स्मारक व स्थलों का संरक्षण भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग करता है। आंकड़ों के मुताबिक, देश में कुल 3,691 का सरंक्षण पुरातत्व विभाग द्वारा होता है।

उत्तर प्रदेश	कर्नाटक	तमिलनाडु	महाराष्ट्र	गुजरात	दिल्ली
743	506	412	286	203	173

स्रोत : संस्कृति मंत्रालय

देवी सरस्वती ने जैसे ही वीणा का मधुर नाद किया, संसार के समस्त जीव-जंतुओं को सहसा वाणी मिल गई।

विद्या की देवी

अंतर्यात्रा
शिवकुमार गोयल

सृष्टि के प्रारंभिक काल में भगवान विष्णु की आज्ञा से ब्रह्मा ने मनुष्य योनि की रचना की। लेकिन अपनी सर्जना से ब्रह्मा जी संतुष्ट नहीं थे। उन्हें ऐसा लगने लगा कि कहीं कुछ कमी रह गई है, जिसके कारण मौन छाया रहता है। विष्णु से अनुमति लेकर ब्रह्मा ने अपने कमंडल से जल छिड़का। जलकण के पड़ते ही पृथ्वी में कंपन होने लगा। तत्पश्चात प्रकृति के बीच से एक अद्भुत शक्ति प्रगट हुईं। सामने चार भुजाओं वाली एक अद्भुत सुंदर स्त्री थी, जिसके एक हाथ में वीणा थी, तो दूसरा हाथ वर देने की मुद्रा में था। देवी के बाकी दो हाथों में पुस्तक एवं माला थी। ब्रह्मा उस देवी को देख बेहद प्रभावित हुए और उन्होंने उनसे वीणा बजाने के लिए कहा। देवी ने जैसे ही वीणा का मधुर नाद किया, संसार के समस्त जीव-जंतुओं को सहसा वाणी मिल गई। हवा के चलने से उसमें सरसराहट होने लगी। जलस्रोतों को जैसे नवजीवन मिला। ब्रह्मा जी ने उस देवी को सरस्वती नाम दिया। सप्तविध स्वरों का ज्ञान प्रदान करने के कारण ही इनका नाम सरस्वती पड़ा। सरस्वती विद्या और बुद्धि प्रदाता हैं तथा संगीत की रचना करने के कारण संगीत की देवी भी हैं। श्रीकृष्ण ने सरस्वती से खुश होकर उन्हें वरदान दिया था कि वसंत पंचमी के दिन तुम्हारी आराधना की जाएगी। -अमर उजाला आर्काइव से।

शिलालेख

वर दे, वीणावादिनी वर दे!
प्रिय स्वतंत्र रव अमृत मंत्र नव
भारत में भर दे।
काट अंध उर के बंधन स्तर
बहा जननि ज्योतिर्मय निर्झर
कलुष भेद तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे।

- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

गन्ना किसानों की नई चुनौती

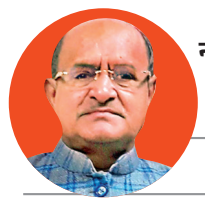

नीति आयोग के एक कार्यबल ने गन्ने की खेती का रकबा कम करने की सलाह दी है, जिससे गन्ना किसान दुविधा में हैं।

के. सी. त्यागी

खेती

केंद्र सरकार द्वारा पारित तीन कृषि कानूनों को समाप्त करने की मांग को लेकर चल रहे किसानों के विरोध-प्रदर्शन और धरने को अब लगभग 80 दिन बीत चुके हैं। 11वें दौर की बातचीत के बाद भी गतिरोध कायम है। प्रधानमंत्री द्वारा राज्यसभा और बाद में लोकसभा में दिए गए वक्तव्य से कुछ बर्फ अवश्य पिघली है। आंदोलन की पवित्रता को स्वीकार कर और वार्ता के लिए हर वक्त दरवाजे खुले हैं, का निमंत्रण निस्संदेह एक सुखद वातावरण तैयार करने में सहायक हो सकता है, लेकिन धरने में बढ़ती गन्ना किसानों की हाजिरी ने एक नया मोर्चा खोल दिया है। विभिन्न जिलों एवं राज्यों से आए किसान पिछले वर्ष का बकाया भुगतान करने और राज्य परामर्श मूल्य बढ़ाने की मांग कर रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि 12 अक्तूबर से गन्ने की पेराई का

सीजन प्रारंभ हो चुका है। लगभग 455.4 लाख टन गन्ने की मिलों में पेराई की जा चुकी है। इससे लगभग 46.04 लाख टन चीनी का उत्पादन हो चुका है। गन्ना किसानों ने अब तक लगभग 12,000 करोड़ रुपये मूल्य के बराबर गन्ना आपूर्ति की है और उन्हें मात्र 4,448 करोड़ रुपये का ही भुगतान हुआ है। उल्लेखनीय है कि पिछले पेराई सत्र का लगभग 3,000 करोड़ रुपये का भुगतान अभी बकाया है।

चीनी मिल मालिक चीनी का बाजार मूल्य बढ़ाने के लिए निरंतर दबाव बना रहे हैं। उनका तर्क है कि डीजल, बिजली के दाम और मजदूरी बढ़ने से चीनी का लागत मूल्य भी बढ़ रहा है। दूसरी ओर किसान संगठनों का आकलन है कि विगत वर्षों में गन्ना उत्पादन में लागत मूल्य में प्रति बीघा 10 हजार से 13,700 रुपये तक वृद्धि हो चुकी है। अकेले डीजल में लगभग 18 रुपये प्रति लीटर की बढ़ोतरी हुई है और मोटर पंप की बिजली दर की बढ़ोतरी में वृद्धि 700 रुपये से बढ़कर 1,750 रुपये हो गई है। लिहाजा सरकार द्वारा घोषित गन्ना मूल्य से अब किसान घाटे के सौदे में है और अतिरिक्त बढ़े दाम की दरकार है।

इस बीच, नीति आयोग के एक कार्य बल ने किसानों की चिंता व असंतोष को और बढ़ा दिया है। आयोग ने गन्ने की खेती का रकबा घटाने की सलाह देकर उन्हें दुविधा में डाल दिया है। रिपोर्ट में गन्ने की खेती की लागत बढ़ने के कई दुष्परिणाम बताए गए हैं, लेकिन इससे निपटने वाले विकल्पों को लेकर रिपोर्ट खामोश है। बकौल नीति आयोग एक किलो चीनी बनाने में डेढ़ से दो हजार लीटर पानी खर्च होता है। देश में चावल और गन्ना खेती की सिंचाई में कुल पानी का 70 फीसदी खर्च होता है। ऐसी स्थिति में भी देश के निर्यात में सर्वाधिक हिस्सेदारी चावल और चीनी की ही है। नीति आयोग की सिफारिशों में गन्ने की खेती का रकबा कम से कम तीन लाख हेक्टेयर घटाने की जरूरत बताई गई है, जिससे 20 लाख टन चीनी का उत्पादन भी घट जाएगा। जबकि वर्तमान में लगभग पांच करोड़ किसान गन्ना उत्पादन के व्यवसाय से जुड़े हुए हैं और श्रमिक कार्य बल में भी लगभग पांच लाख श्रमिक शामिल हैं, रकबा घटने से इनके रोजगार पर असर पड़ सकता है।

गन्ना किसानों पर यह संकट 1991 के नव उदारवादी आर्थिक नीतियों को लागू किए जाने से और बढ़ा है। पहले गन्ने का दाम तय करते समय छह मुख्य बातों का ध्यान रखना पड़ता था—गन्ना उगाई की लागत, अगर गन्ने की जगह किसान दूसरी फसल बोता है, तो उस पर कितना मूल्य मिलता है, उपभोक्ता को किस दाम पर चीनी मिल रही है, उपभोक्ता किस दाम पर खुले बाजार में चीनी खरीद रहे हैं, गन्ने से चीनी की रिकवरी कितनी है, गन्ने के सह उत्पाद जैसे शीरा, आदि से होने वाली आय। इस पुराने भार्गव फार्मूले के तहत चीनी एवं उसके सह उत्पादों की कीमतों में वृद्धि से किसानों को उसमें हिस्सा मिलता था, जो नई कार्यप्रणाली लागू होने पर स्वतः समाप्त होगा। केंद्र एवं राज्य सरकारों से अपेक्षा है कि कृषि संकट को लेकर ग्रामीणों को कई मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है, लिहाजा नई योजनाओं के क्रियान्वयन पर फैसला फिलहाल स्थगित करना राष्ट्रहित में होगा।

- लेखक पूर्व सांसद व जनता दल (यू) के महासचिव हैं